रोजगारपरक भाषा के रूप में हिन्दी

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

हिंदी आज रोजगार और बाजार की भाषा बन चुकी है। आने वाले दिनों में इसका स्वरूप विश्वव्यापी होगा। आज भी पूरे विश्व में सौ करोड़ से अधिक जनता हिंदी बोलती एवं समझती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि हिंदी पूरे विश्व में पहले नंबर की बोली जाने वाली भाषा है। भविष्य में हिंदी भाषा के विकास की आपार संभावनाएँ हैं। बाहर की विदेशी कंपनियाँ आज हिंदी के अपने सॉफ्टवेयर बनाकर बाजारवाद को बढ़ावा दे रही हैं। इससे हिंदी में काम करना तथा हिंदी बोलना बाजार की मजबूरी बन गया है। इसी कारण असंख्य उत्पादों को बेचने के लिए भी विदेशी कंपनिया हिंदी भाषा का प्रचार कर रही हैं। पिछले दो दशकों में रेडियो, टी0वी0 तथा प्रिंट पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी समाचार पत्रों का जो स्वरूप विकसित हुआ है। उससे भी हिंदी को बढ़ावा मिला है। विज्ञापनों तथा टी0वी0 सीरियलों में माध्यम से हिंदी विदेशों में प्रचारित एवं प्रसारित हुई है। आज विदेशों में हिंदी फिल्मों के गीत गुनगुनाए जाते हैं।

बीज शब्द– *रोजगारपरक भाषा,वैश्वीकरण, बाजार,भारतीय संस्कृति।*

भाषा के प्रश्न को समझने के लिए वैश्वीकरण को समझाना होगा ,क्योंकि वैश्वीकरण से भाषा प्रभावित होती है? वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष संबंध बाजारवाद से है ,यह ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत भौगोलिक दूरियों, सीमाओं, सरहदों, दीवारों के बावजूद दुनिया के देश तकनीक के माध्यम से विचारों, उत्पादों, संस्कृति के अन्य पहलुओं के आदान–प्रदान से एक दूसरे के करीब आ जाते हैं। शुद्ध तौर पर आर्थिक एकीकरण प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक नोम चोम्स्की के शब्दों में वैश्वीकरण का अर्थ अंतरराष्ट्रीय एकीकरण है। वस्तुतः यह संपूर्ण विश्व को एक गाँव में बदलने की अवधारणा में भाषा की अहम भूमिका होती है, जो भाषा व्यापक रूप से प्रयोग में रहेगी उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा। जब बड़ा बाजार बन जाएगा और उस बाजार में प्रयोग करने के लिए जिस भाषा का उपयोग होगा वही भाषा जीवित रह पाएगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि हिंदी भाषा का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है और राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी का प्रयोग करना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। भारत की आजादी की लड़ाई में देश को जोड़ने में हिंदी की भूमिका को देखते हुए हिंदी भाषी राज्यों के नायकों की तुलना में अन्य भाषा के राज्यों के नायको जैसे सी राजगोपालाचारी, काका कालेलकर धर्माधिकारी, स्वामी दयानंद सरस्वती गांधी जी आदि की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है। डॉ0 राम मनोहर लोहिया जी ने भी संसद व बाहर सदैव हिंदी का पक्ष लिया था। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाए या नहीं यह हमेशा विवादित रहा है। भाषा के आधार पर देश में दंगे हुए एवं राज्यों का बँटवारा भी हुआ।

वर्तमान मे जारी नई शिक्षा नीति के ड्राफ्ट मे भी अन्य राज्यों में हिंदी की भूमिका को लेकर अभी भी विवाद बना हुआ। विभिन्न विवादों के बावजूद भी हिंदी भारत व विश्व में तेजी से बढ़ती रही है। यदि हिंदी के इतिहास को अवलोकित किया जाएंतो यह लगभग एक हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। यद्यपि यह अपने विभिन्न रूपों में अति प्राचीन काल से है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक 'डॉ0 हरदेव बाहरी' के शब्दों में हिंदी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से आरंभ होता है, बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि वैदिक भाषा हिंदी है। यह इस भाषा का दुर्भाग्य रहा है कि युग युग में इसका नाम परिवर्तित होता रहा है , कभी संस्कृत तो कभी प्राकृत, कभी पाली, अब हिंदी। यदि वैदिक संस्कृत और आधुनिक हिंदी में अंतर माना जाए तो हिबरू, रूसी, चीनी, जर्मन और तमिल आदि के भी प्राचीनतम और अद्यतन स्वरूप में पूरी तरह अंतर है, परंतु लोगों ने भाषाओं के नाम नहीं बदले और उन्हें प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक में विभाजित कर दिया। इसी तरह से यदि माना जाए तो हिंदी में भी प्रत्येक काल में केवल नाम ही बदले हैं।

'तकनीकी क्रांति' ने हिन्दी को व्यावहारिक और रोजगारपरक भाषा बनने की ओर अग्रसर किया है। शिक्षा, चिकित्सा और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में हिन्दी की आनलाइन सामग्री ने महानगरों ही नहीं, छोटे शहरों कस्बों के बच्चों और युवाओं को प्रतिस्पर्धा में ला दिया है। आज बाजार में एजूकेशन लार्निंग और मेडिकल लर्निंग एप की बाढ़ आ चुकी है जो हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। ई–कामर्स के दिग्गजो ने भी हिन्दी में एप लांच कर माना है कि बाजार बढ़ाने के लिए उसकी कितनी अहमियत है''।

हिन्दी दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से बोली जानी वाली भाषाओं के रूप में वृद्धि कर रही है। इसके कई वजह हैं। एक तो भारतीय संस्कृति की खूबियाँ जो दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। दूसरी तरफ एक बड़ा और सस्ता बाजार, जिसे दुनिया के सारे उद्यमी पाना चाहते हैं, तीसरी बात यह है कि दुनिया के लगभग हर देशों में हिन्दी भाषियों की धमक। इन सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अब ऑनलाइन हिन्दी सीखने और सुधारने के लिए कई एप आ चुके हैं। इनमें से 'लर्न' हिन्दी स्पीक, 'ड्रॉप्स' और लर्न हिन्दी फ्री प्रमुख है–हिन्दी सिखाने वाला लर्न हिन्दी स्पीक एप है जो बच्चों के साथ–साथ बड़ों के लिए भी उपयोगी है। हिन्दी में बातचीत के दौरान अगर कोई गलती होती है, तो यह सही शब्द के बारे में बताता है। इसमें भाषा को बेहतर करने के लिए हिन्दी व्याकरण भी दिया गया है। इसमें चैट बॉट गर्ल माडलों के साथ हिन्दी के वाक्यों की प्रैक्टिस की सुविधा भी मिलती है। अगर हिन्दी फ्रेज का गलत उच्चारण करते हैं, तो यहाँ तुरन्त फीड बैक मिलता है। 'ड्राप्स' एप हिन्दी सीखने वालों के लिए यूनीक एप है। इसमें शब्दों को जानने और उसे याद रखने के लिए इलस्ट्रेटेड ग्राफिक्स का इस्तेमाल किया गया है। यह एप केवल हिन्दी शब्दों की प्रैक्टिस के लिए है। इसमें विभिन्न टापिक्स से जुडे 1700 से अधिक शब्द दिये गये हैं। 'लर्न हिन्दी फ्री' हिन्दी से जुडे 9000 से अधिक कॉमन वर्ड और फ्रेज दिए गये हैं, साथ ही आडियो की सुविधा भी है। इसमें हिन्दी के पाठों को कटेगरी और सब कटगरी में बाँटा गया है। साथ ही क्विज गेम भी खेल सकते हैं जो हिन्दी इम्प्रूव करने में मदद करता है। इसमें 32 भाषाओं को हिन्दी में अनुवाद करने की सुविधा दी गयी है।''

हिन्दी के प्रति अपने समर्पण भाव की कहानियाँ तो आपने सुनी होगी। लेकिन विदेशियों का हिन्दी के प्रति समर्पण भाव जानने के बाद शायद ही आपको विश्वास हो। डॉ0 यासमीन सुल्ताना नकवी जो कि ओसाका विश्वविद्यालय जापान में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर हैं, वे जापान

के एक हिन्दी प्रोफेसर श्री कोमा कात्सुरों के हिन्दी के प्रति निःस्वार्थ और समर्पण पर प्रकाश डालती हुई कहती है कि– '' प्रो0 कोमा कात्सुरों ओसाका विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष थे। वह उर्दू, हिन्दी, फारसी और अंग्रेजी पर समान अधिकार रखते थे। जापानी उनकी मातृभाषा है– जापानी छात्रों की समस्यायें भारतीय शब्दकोश से नहीं हल होती थी। तब प्रो0 कोमा के मन में एक ख्याल आया कि हिन्दी पढ़ने–पढ़ाने के लिए क्यों न एक शब्दकोश तैयार किया जाए। उनका सपना धीरे–धीरे साकार होने लगा। दृढ निश्चय के साथ शब्दों का चयन शुरू हो गया। उन्हें पत्नी का भी सहयोग मिलने लगा। इसके निर्माण में कई दशक लग गए। इस कार्य में प्रो0 कोमा के शिष्य ताकाहाशी ने अंतिम रूप देने में उनका पूरा सहयोग किया। 1439 पृष्ठों का इस शब्दकोश में शब्द और अर्थ को समझाने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति को भी बड़ी सहजता से समझा जा सकता है। इस शब्द कोश में 270507, मुहावरे, 486 कहावते 6556 अंग्रेजी शब्द तथा 12324 अन्य शब्दों का प्रयोग किया गया है। साथ ही 2500 वनस्पतियों के नाम दिए गए है। जापान में छपाई बहुत मंहगा है। उन्होने अपना घर बेच दिया, जिस घर में बैठकर उसका निर्माण किया था। जापान के मशहूर प्रकाशन 'ताईशूकेन शीतेन' द्वारा 2006 में इस दुर्लभ शब्दकोश का प्रकाशन हुआ। शब्दकोश का एक–एक अक्षर यह प्रमाणित करता कि प्रो0 कोमा ने कितनी मेहनत की है। मूल शब्द जिस भाषा का है वह उसी में है।''

आज विश्व में हिन्दी अबाध गति से विस्तार ले रही है। लोगों को इसके प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इसके बढ़ते प्रभाव ने दुनिया को इस पर सोचने–विचार करने पर मजबूर किया है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी ने 900 से ज्यादा हिन्दी के शब्दों को अपने पृष्ठों में जगह दी है। इस पर प्राकश डालते हुए आक्सफोर्ड डिक्शनरी की 'वर्ल्ड इंग्लिश एडीटर' डेनिका सालाजार कहती हैं– ''अब तक हिन्दी के 900 शब्दो को लिस्ट में शामिल किया गया है। आक्सफोर्ड के मार्च संस्करण में हिन्दी का शब्द 'चड्ढी' इंग्लिश शब्दों की लिस्ट में शामिल किया गया है, इसी तरह बापू सूर्य नमस्कार और अच्छा शब्द भी इस शब्दकोश में जगह बना चुके हैं। सन् 2017 ई0 में करीब 70 भारतीय शब्द आर्क्सफोर्ड में शामिल किए। इनमें 33 हिन्दी के थे। सन् 2017 ई0 में 'नारी शक्ति' और सन् 2018 ई0 में 'आधार शब्द' को 'हिन्दी ऑफ द ईयर' के खिताब से नवाजा गया था।'

साहित्य के क्षेत्र में अमेरिका, मारीसश, कनाडा, चीन, जापान, ट्रिनीनाड, टोबैको सहित अनेक देशो के रचनाकारों ने हिन्दी को समृद्धि बनाने और विकास करने में अपना योगदान दिया है। विश्व में हिन्दी की स्थिति को स्पष्ट करते हुए डॉ0 यासमीन सुल्ताना नकबी कहती हैं कि '' विश्व स्तर पर देखा जाए तो अमेरिका में हिन्दी प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी है। दूसरा स्थान जापान का है। तीसरा जर्मनी का जहाँ संस्कृत का भी बाहुल्य है। जापान में हिन्दी किसी दबाव में नहीं पढाई जाती। छात्र अपनी स्वेच्छा से पढ़ता है। एक–एक विभाग में कई–कई योग्य प्रोफेसर नियुक्त किए जाते है। हर विभाग में एक भाषा विशेषज्ञ होता है। मैं भारत से हिन्दी विभाग के प्रोफेसर के तौर पर ओसाका विश्वविद्यालय गई थी।''

विदेशों में आज हिन्दी जहाँ फल–फूल रही है, वहाँ इक्कीसवीं सदी में भी अपने देश में धड़ेबदी और सियासत का शिकार हुई है। यह हिन्दी की विडम्बना ही कही जाएगी कि अमेरिका, कनाडाई, चीनी, जापानी जैसे विदेशी जिनकी मात्र भाषाएँ भिन्न–भिन्न हैं के द्वारा हिन्दी के विकास में अपना पूर्ण सहयोग दिया जा रहा है। वहीं अपने स्वदेश में कन्नड़, तमिल, मलियाली, मिजो, नागा, कुकी, आदि भाषियों द्वारा सिर्फ इसलिए विरोध किया जाता है कि कहीं अपनी

सियासत फीकी न पड़ जाए। इन्हें समझना होगा कि हिन्दी के विकास में ही सभी भारतीय भाषाओं का विकास जुडा है। अगर हिन्दी का लाभ विदेशी ले रहे है, तो भारतीय भाषाओं को भी लेना चाहिए। हमें अपने अतीत की तरफ झाँकना होगा। दुनिया का महान धर्म बौद्ध जिसकी जन्म स्थली भारत रही है, लेकिन आज इसी विरोध के चलते वह अपने जन्म स्थान पर मर चुका हैं, और जिन देशों में विस्तृत है वहाँ आज भी शान्ति है। जहाँ दुनिया दहशत गर्दी फिरका परस्ती, नस्लभेद, जाति वर्ण, मजहबी फसाद में ग्रसित है, वहीं चीन, जापान, थाईलैण्ड, ताइवान, सिंगापुर, वियतनाम कम्बोडिया जैसे बौद्ध धर्म वाले अनेक देशों में यह बीमारी नहीं दिखती। इससे सीख लेते हुए भारतवासियों कों हिन्दी का विरोध त्यागना होगा। हिन्दी दुनिया की एक महान विस्तृत भाषा है। इसकी आत्मा महान है। उदारता ऐसी है कि किसी भी भाषा का विरोध, नहीं करती। जो भी संस्कृतियाँ हिन्दी के नजदीक आयीं, उनकी शब्दों और बोलियों को आतिथ्य दिया, स्वीकार किया। सभी भाषाओं को भी इसके महत्त्व को स्वीकार करना होगा। हिन्दी की महानता को इसी से जाना जा सकता है कि इसने दुनिया की हर प्रमुख भाषाओं के शब्दों को अपने शब्दकोशों में उचित सम्मान दिया है। किसी शब्द को विदेशी कह नफरत नहीं किया। 'वसुधैव कौटुम्बकम्' ही हिन्दी का संस्कार है।

संदर्भ–सूची

1. प्रसाद डॉ0 विनोद कुमार–भाषा और प्रौद्योगिकी–वाणी प्रकाशन–21ए,दरियागंज ,नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–1999
2. श्रीवास्तव रवीन्द्रनाथ, भाषाई अस्मिता और हिन्दी, द्वितीय संस्करण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996
3. नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 15 जुलाई 2007
4. बाहरी डॉ0 हरदेव –हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप, किताब महल, संस्करण 2009
5. हिन्दुस्तान दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, 14 सिम्बर 2019
6. अमर उजाला, दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रयागराज, संपादकीय, पृष्ठ, 14 सिम्बर 2019
7. दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रयागराज, 14 सितम्बर 2019
8. दैनिक जागरण, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, प्रयागराज, 16 सिम्बर 2019, सप्तरंग,पृष्ठ, साहित्यिक पुनर्नवा।
9. वार्षिक रिपोर्ट रजिस्ट्रार ऑफ–न्यूज पेपर्स फॉर इण्डिया, 2016–17, 15 दिसम्बर 2017
10. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली–110002, सं0 2015 ई0।
11. मोहम्मद डॉ0 मलिक – राजभाषा हिन्दी, प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली–1100030, सं0 1993 ई0।
12. आजकल, जनवरी–2016(प्रवासी भारतीय समाज, भाषा, साहित्य और संस्कृति–विमलेश कान्ति शर्मा)
13. प्रसाद जयशंकर – चन्द्रगुप्त, चतुर्थ अंक, दृश्य छह, संजय बुक सेन्टर गोलघर वाराणसी, सं0 1989ई0
14. बाहरी डॉ0 हरदेव – हिन्दी भाषा,संस्करण 1994ई0, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, विश्वविद्यालय मार्ग, इलाहाबाद
15. बाहरी डॉ0 हरदेव – शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, परिशिष्ट 1, राजपाल ऐण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, सं0 1994ई0